मन्दिर हैं । इनमें प्रसिद्ध विरला मन्दिर है जो सारा संगमरमर का बना हुआ है । जयपुर नरेश श्री महावीर जी तीर्थ का परम भक्त था । उसने इस तीर्थ की महिमा सुनकर इस तीर्थ के नाम एक गांव कर दिया था । जयपुर कला का केन्द्र है, यहां सोने की स्याही व कांच से चित्र बनाने वाले कारीगर हैं । इस प्रकार जयपुर और इसके आसपास का इलाका जैन व हिन्दू संस्कृति के स्थलों से भरा पड़ा है । यहां राजस्थान के लोग सज्जन, दानी, सात्विक वृति के हैं । इस शहर को बहुत से साहित्यकार, आचार्य, उपाध्याय, मुनि, महारथी की जन्मभूमि रही है, जिन्होंने जैनधर्म, कला, साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया है ।

इस भूमि पर जाने के लिये मेरे धर्मभ्राता श्री रवीन्द्र जैन मंडी गोविन्दगढ़ पहुंचे । काफी कामों में से इस यात्रा के लिये समय निकालना काफी कठिन था । पर पूज्य पिताजी ने मुझे यात्रा के लिये सहर्ष विदा किया । उस समय दिन के ११.३० बज चुके थे । हम बस द्वारा देहली पहुंचे, उस समय शाम के ४ बजे थे । हम जयपुर वाले स्टैंड पर पहुंचे । हमें राजस्थान ट्रांस्पोर्ट की बस मिल गई । यह बस अहमदाबाद जानी थी । पहले बस राजस्थान हाऊस गई । वहां से जयपुर के लिये बस वालों ने अखबार, पत्रिकायें उठाई, फिर बस दिल्ली-जयपुर के मार्ग पर चल पड़ी । दिल्ली के निकलते ही रात्रि हो चुकी थी । सड़क बहुत खुली है । एक साथ काफी ट्रैफिक स्पीड से गुजर सकता है ।

बस जयपुर-अहमदाबाद रूट नं: ८ से गुजर रही थी । दूर तक बस्ती का नाम नहीं था । आधी रात हो चुकी थी, एक टूरिस्ट स्थल आया, वहां सभी सरकारी बसें रुकती हैं । यह बंगला ए.सी. बंगला था, जहां यात्रियों के खाने-पीने ठहरने का अच्छा प्रबन्ध था । इस स्थल पर

हमारी बस रुक गई । यहां सभी बसें आध घण्टे तक ठहरती हैं । खाने के इलावा चाय काफी का अच्छा इंतजाम है । हमने यहां परोसा जाने वाला खाना खाया । कुछ ही समय के बाद हम जयपुर पहुंचे । रात्रि के दो बजे हम होटल में पहुंचे । यहीं कान्फ्रेन्स का आयोजन था । रात्रि को भी महावीर इंटरनैशनल के कार्यकर्ता बैठे थे । यह भव्य होटल एक विशाल परिसर में स्थित था । यहां हर प्रकार की व्यवस्था प्रबन्धकों ने कर रखी थी । कान्फ्रेन्स में आने वालों को जयपुर दिखाने की व्यवस्था उन्होंने कर रखी थी । हमें ठीक कमरा दिलवाया । गर्मी के दिन थे, पर राजस्थान में जितनी गर्मी पड़ती है, उतनी ही रात को ठंड होती है । अब रात्रि थी, खाने का कोई समय नहीं था, चाय का कोई समय नहीं था । ऐसे में हमने कुछ आराम करना ठीक समझा । रात्रि के चार बजे रहे थे । हम सैर करने की नीयत से बाहर निकले । एक स्थान पर चाय मिल गई, चाय पीकर हम होटल आ गये ।

आचार्य श्री तुलसी जी के दर्शन :

मेरे गुरुदेव आचार्य श्री तुलसी जी व वर्तमान आचार्य श्री महाप्रज्ञ साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा एक भव्य स्थल पर विराजमान हैं । हमें उनका पता चला, सोचा कि पहले अपने गुरुदेव के दर्शन किये जायें । काफी समय से उनके दर्शन नहीं किये थे । पंजाब में विचरण के बाद उनके दिल्ली में दर्शन करने का अवसर दो-तीन बार मिला था । बाद में लम्बे अन्तराल के बाद उनके दर्शन का यह अवसर था, वैसे मैंने आचार्यश्री तुलसी के दर्शन जैन विश्व भारती लाडनू में कई बार किये हैं । लाडनू आचार्यश्री की जन्मभूमि है । यहां के अनेकों साधु-साध्वियां तेरापंथ जैन संघ की शान है ।

यहां १००० वर्ष पुराना दिगम्बर मन्दिर है । यहां जैनों की वस्ती है । आचार्यश्री जयपुर में एक भव्य स्थान में ठहरे थे, इस स्थान के पास ही उनका प्रवचन स्थल था । आचार्यश्री जहां निकलते, वहां सारा राजस्थान उमड़ पड़ता । इनके साथ एक छोटा बाजार चलता जहां राजस्थान की बनी हर वस्तु साहित्य मिल जाता । इस साहित्य में शास्त्र, चित्र, ध्यान साहित्य आराम से मिल जाता । उसी स्थल पर यात्रियों के रहने का व्यापक प्रबंध था । आचार्य तुलसी का प्रचार राजस्थान की संस्कृति के खुले दर्शन का प्रतीक है ।

हम रिक्शे में एक स्थान पर पहुंचे, सुबह का समय था । आचार्य श्री प्रवचन स्थल के पास एक मकान में चतुर्मास हेतू विराजमान थे । उस दिन आचार्यश्री तुलसी अस्वस्थ थे । उन्हें श्वास की तकलीफ थी । हम दोनों ने उन्हें तिक्खुतों के पाठ से वन्दना की । वह हमें अच्छी तरह पहचानते थे । वह कुछ कहना चाहते थे, पर इस रोग के कारण बोल नहीं पा रहे थे । ऐसा हमने पहली बार देखा था । पास बैठे साधु-साध्वी चिन्तित थे । आचार्यश्री अपने धैर्य का पूरा प्रमाण प्रस्तुत कर रहे थे ।

हमने हर एक साधु-साध्वी के चरणों में वन्दन किया । फिर साध्वी प्रमुख कनकप्रभा से आचार्यश्री के स्वास्थय के बारे में बातचीत की । हमने अपना साहित्य युवाचार्य महाप्रज्ञ को समर्पित किया । इस साहित्य में अन्य पुस्तकों के साथ-साथ मेरे द्वारा लिखित अनजाने रिश्ते पुस्तक प्रमुख थी । युवा आचार्य से हमारी अपने साहित्य के बारे में बात हुई । उस समय कुछ कार्यकर्ताओं ने एक योजना हमारे सम्मुख रखी - सारे ध्यान साहित्य का पंजाबी अनुवाद किया जाये, मैने इस बात के लिये हामी भर दी, पर किसी कारणवश हमें इस प्रसंग में कोई प्रगति नहीं मिली । कुछ

सम्पर्क का अभाव भी रहा, पर कुछ भी हो, जयपुर में आचार्य तुलसी जी व उनके शिष्य परिवार के दर्शन हमारे लिये मंगलमय आशीर्वाद था । हमने वहां कुछ साहित्य व प्रचार सामग्री ली । फिर वहां के लोगों से दर्शनीय स्थलों की जानकारी मांगी । श्रावक वर्ग में कई ऐसे श्रावक थे, जो हमारी इस मीटिंग में शामिल होने के लिये आये थे । इन्हीं श्रावकों ने हमें अजमेर नाथ द्वारा रणकपुर तीर्थ की यात्रा का सुझाव दिया । हमें करीबी रास्ता बताया गया । हम वापिस सभा स्थल पर आ गये।

महावीर इंटरनैशनल की मीटिंग उसी होटल में शुरु हुई । इस मीटिंग की कार्यवाही तीन दिन चलनी थी । हमने इसमें एक दिन के लिये भाग लिया, फिर दूसरे दिन जयपुर देखने का कार्यक्रम बनाया । इस क्रम में हमने एक आटो रिक्शा पूरे दिन के लिये किया । उसे कहा "तुम जितना जयपुर दिखा सकते हो दिखा दो, शाम तक तुम्हें हमारे साथ रहना है । दोपहर का खाना हम खा चुके थे । जब आचार्य तुलसी के दर्शन करने गये थे, तब हम मूर्तियों वाला बाजार आराम से देख कर आये थे । जयपुर की भव्यता बेमिसाल है । इतना शान्त शहर जहां हर तरह के लोग घूम रहे थे । हमारी इच्छा सारा जयपुर देखने की थी, पर हमें आसपास के तीर्थ भी देखने थे । सबसे पहले हम आमेट के किले में पहुंचे । यह किला जयपुर से अलग ही स्थान पर स्थित है । यह स्थान जयपुर की अपनी पहचान है । यह किला ८ कि.मी. के रकबे में फैला है । एक ऊंची पहाड़ी पर विशाल किला भारतीय इतिहास की धरोहर है । हम आटो से आमेट किला पहुंचे । उस समय भयंकर गर्मी पड़ रही थी । किले के द्वार पर हाथियों की विशाल संख्या खड़ी थी, यहां पर्यटकों को हाथी पर सवार करा कर सारा किला

घुमाते हैं । मैंने हाथी के वजाये जीप को प्रमुखता दी क्योंकि हाथी द्वारा इतना भव्य किला देखने के लिये विपुल समय चाहिये था । यह किला अकवर के सेनापति व साले राजा मानसिंह ने वनवाया था ।

मैंने गाईड की सहायता से जीप द्वारा किला घूमने का निश्चय किया । किले में गणेश पोल देखने योग्य है । गाईड की मदद से पुरानी तोपें देखीं । इस स्थान पर तोप वनाने का कारखाना देखा, एक वड़ी तोप देखीं । ऐसी तोप अन्यत्र दुर्लभ है । सारा किला राजपूत शैली का वना हुआ है । इस किले में अनेकों भव्य महल अपनी शान से खड़े हैं । यह किला भारतीय इतिहास में राजा मानसिंह व अकवर के रिश्तों का प्रतीक है । सारा किला पूर्ण सुरक्षित है । इसी कारण यहां फिल्मों की शूटिंग होती रहती है । किले में कई भव्य संग्रहालय हैं । किले को देखने में हमें चार घंटे से ज्यादा समय लगा । फिर हमने विभिन्न जैनतीर्थ देखे । यह रात्रि यहां व्यतीत हो गई ।

सुवह को हमने हवामहल, सिटी पैलेस, जल महल, विरला मन्दिर देखे । सिटी पैलेस में वहुत ही भव्य म्यूजियम है । इस दिन भी वहुत व्यस्त रहे । कुछ समय दोनों दिन हम कान्फ्रेन्स में शामिल हुए । फिर हमारा राणकपुर, अजमेर, नाथ द्वारा, मुच्छेला महावीर व कीर्ति स्तम्भ देखने का कार्यक्रम वना । कुछ कलात्मक जैन मन्दिर देखे । फिर अगले गन्तव्य के स्थान पर चलने के लिये वस स्टैंड पर आये ।

जयपुर से अजमेर :

हमने जयपुर का वस स्टैंड पहले रात्रि को देखा था । अव हम शाम को अजमेर जैसे एतिहासिक शहर की ओर

रवाना हुए । यहां की बस सेवा बहुत ही सुन्दर है । हमने ऐसी बस अजमेर के लिये पकड़ी । जयपुर से अजमेर १२० कि.मी. दूर है । इस नगर का प्राचीन नाम अजयमेरु था । यह नगर राष्ट्रीय मार्ग ८ पर स्थित है । यहां से ९ कि.मी. की दूरी पर हिन्दू धर्म का तीर्थ पुष्कर है । पुष्कर तीर्थ एक तालाब के किनारे स्थित है । संसार की रचयिता माने जाने वाले ब्रह्मा का, रास्ते में यहां एक मात्र मन्दिर है - मन्दिर है पुष्कर । मन्दिरों के कारण राजस्थान का ये पर्यटन स्थल है । पुष्कर का मेला बहुत प्रसिद्ध है । जहां बैल, ऊंट, गधे द्वारा करोड़ों रुपयें का व्यापार होता है । यह अजमेर हावड़ा, दिल्ली, इन्दौर, चितौड़, आगरा, जोधपुर से जुड़ा हुआ है । रेलवे स्टेशन बाहर से २ कि.मी. है ।

तीर्थ-दर्शन :

राजस्थान का प्रमुख नगर अजमेर एतिहासिक व धार्मिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है । यहां का प्रमुख दिगम्बर जैन मन्दिर सोनी जी की नसिया है । सुभाष वन के निकट लाल पत्थरों से निर्मित जैन मन्दिर को लाल मन्दिर कहते हैं । यह मन्दिर सुन्दर नक्काशी से अलंकृत है । हाल के एक अंश में गिल्ट किये काम के माडल में मानव जन्म के क्रमिक विकास और जैन पुराणिक गाथाओं को उत्कीर्ण किया गया है । दो पृथक-पृथक प्रखण्डों में इसका निर्माण हुआ है । दोनों के प्रवेश द्वार अलग अलग हैं । इसके एक भाग में तेरह द्वीप की रचना है जिसके अढ़ाई दीप की रचना विस्तृत है ।

दूसरे भाग में अयोध्या नगरी का भव्य निर्माण किया गया है । यहां भगवान ऋषभदेव के पांच कल्याणक उत्कीर्ण किये गये हैं । सिद्धाकर चैत्यालय नसिया नाम से प्रसिद्ध

मन्दिर का निर्माण सेठ मूलचन्द सोनी ने १८६५ में करवाया था। इसी कारण इसका नाम सोनी जी की नसिया है ।

अजमेर में आचार्य जिनदत्त सूरि का स्वर्गवास हुआ था । उनकी भव्य समाधि विनय नगर क्षेत्र में स्थित है । इस पावन तीर्थ का निर्माण १२वीं शताव्दी में हुआ था । दादागुरु श्री जिनदत्त सूरि का जन्म सन् १०७६ में गुजरात के धोलकानगर में हुआ था । ६ वर्ष की आयु में आपने संयम ग्रहण किया । आपका यह स्थान चमत्कार पूर्ण है । सन् ११५५ में ७६ वर्ष की अवस्था में दादागुरु देव अजमेर स्वर्गलोक पधारे । उनके तपोवन के प्रभाव से अंतिम समय में ओढ़ाई गई चादर, चरण पादुका व मुंहपट्टी स्वतः विना जले अग्नि से वाहर आ गिरी । यह वस्तुएं आज भी जैसलमेर के ज्ञान भंडार में देखी जा सकती हैं जिन्हें एक कांच की पेटी में सुरक्षित रखा गया है ।

मन्दिर में प्रभु पार्श्वनाथ जी की चरण पादुका एक सप्त धातु प्रतिमा विराजमान है । प्रभु विमलनाथ की प्रतिमा भी है । यह स्थान तीन तरफ से अरावली पहाड़ से घिरा हुआ है । यहां का वातावरण आत्मा को शांति प्रदान करता है ।

अन्य दर्शनीय स्थल :

अजमेर में स्टेशन से कुछ दूरी पर ख्वाजा साहिव की दरगाह है । यह मुस्लिम जगत का पवित्र तीर्थ है । यहां सव धर्मों के लोग शीश झुकाते हैं । वादशाह अकवर ने इस स्थान को दो विशाल देगें प्रदान की थीं ।

दरगाह के पास ढाई दिन का झोंपड़ा मस्जिद है, इसे मुहम्मद गौरी ने वनवाया था, सन् ११९८ में इसका निर्माण हुआ था । डेढ़ घंटे में २०५५ फीट की ऊंचाई चढ़कर

तारागढ़ पहाड़ पर एक दुर्ग है, जिसका निर्माण १५७० में अकवर ने किया था । सफेद संगमरमर से वना अव्दुल्ला खां का मकवरा दर्शनीय स्थल है । दो पहाड़ों के वीच लुनी नदी पर कृत्रिम झील झरना सागर वनाई गई है । जहांगीर ने यहां एक सुन्दर उद्यान दौलत वाग का निर्माण करवाया । १६३७ में शाहजहां ने मरमरी दीवारों पर चार सुन्दर छत्र और संगमरमर लगवाया । यहां एक साईं वावा का मन्दिर अभी वना है । अजमेर से मात्र ११ कि.मी. दूरी पर उत्तर पश्चिम में १५३६ फीट की ऊंचाई पर हिन्दुओं का पुष्कर तीर्थ है । अजमेर व पुष्कर के वीच नाग पहाड़ सीमा रेखा का काम करता है । पुष्कर के दो वस स्टैंड हैं । यह तीर्थ एकमात्र व्रह्मा मन्दिर के लिये प्रसिद्ध है । इस तीर्थ पर अन्य मन्दिर हैं, जिनकी संख्या ५०० से अधिक है ।

पुष्कर में ५२ घाट हैं । प्रतिवर्ष अक्तूवर-नवम्वर में १० दिनों का मेला लगता है । भव्य माता का मन्दिर चारों ओर से सौम्य वातावरण से घिरा हुआ है । इसी मन्दिर के निकट अजमेर के दिगम्वर जैन सम्प्रदाय की छत्रियां व चवूतरों के भव्य दर्शन होते हैं । पुष्कर झील के दूसरी ओर सावित्री पहाड़ है । तीर्थ यात्रियों व पर्यटकों को यह सीधा मन्दिर अपनी ओर आकर्षित करता है । यहां सावित्री देवी व सरस्वती की पूजा होती है । पूजा सिर्फ महिलाएं ही कर सकतीं हैं । पुरूषों को यहां पुजा करने का अधिकार नहीं ।

वस स्टैंड से थोड़ी दूरी पर रंगनाथ मन्दिर है जो द्राविड़ शैली का है । मन्दिर का सोने का कलश भी दर्शनीय है । यह मन्दिर पुष्कर की शान है । अजमेर में कावर मार्ग पर मां लिपावास में ८०० वर्ष प्राचीन दो कल्पवृक्ष हैं । ऐसा माना जाता है कि १२ वर्षों में एक वार दो तरह के पुष्प यहां लगते हैं । अजमेर पहाड़ियों से घिरा सुन्दर करवा है ।

इसका मुकुट पुष्करधाम है । पुष्कर तीर्थ का हिन्दू पुराणों में वहुत गुणगान गाया गया है । विदेशी पर्यटक पुष्कर के मेले में दस दिन तक टिके रहते हैं ।

हमारा अजमेर भ्रमण :

हम जयपुर से अजमेर पहुंचे । हमें पता चला कि यहां से राणकपुर को छोटा रास्ता जाता है, पर हमारी वस रात्रि को अजमेर पहुंची । हमने सवसे पहले अजमेरी ख्वाजा की दरगाह पर जाना ठीक समझा, यह दरगाह वस स्टैंड से नजदीक पड़ती थी, रात्रि के ८ वज चुके थे । इस कारण हम अजमेर के दो स्थान पर गये । एक दरगाह, दूसरा

अढाई दिन का झोंपड़ा :

दरगाह में वेहद भीड़ थी, यह भारत की पुरानी दरगाह मानी जाती है । हर जाति, धर्म के लोग यहां श्रद्धा के फूल चढ़ाते हैं । इस दरगाह का इतिहास भारत में मुसलमानों के इतिहास से शुरु हो जाता है । विशाल परिसर है, जहां अकवर द्वारा दान दी गई इतिहासिक दो देगें हैं जहां श्रद्धालु चावल, गुड़ डालते रहते हैं । यहां लंगर चौवीस घण्टे चलता है । इस लंगर को प्राप्त करने लम्वी-लम्वी लाईनें लगी हुई थीं । एक व्यक्ति सीढ़ी द्वारा देग तक पहुंचा हुआ था । एक वड़ी देग है, दूसरी छोटी । दोनों देगें कभी खाली नहीं रहतीं । यहां सेवा करने वालों को खादिम कहा जाता है । यह पण्डों से कम नहीं, हर समय कव्वालियां चलती रहती हैं । सारी कव्र के आसपास चांदी का विशाल परिकोटा है । इस दरगाह में गये तो खादिमों ने हमें घेर लिया । एक खादिम ने हमारे द्वारा श्रद्धावश समर्पित चादर को मजार पर चढ़ाया । फिर हमारे हक में दुआ की । दरगाह एक विशाल वाजार में वनी है । जहां वहुत भीड़ रहती है । हर प्रान्त व

धर्म का व्यक्ति वहां देखा जा सकता है । फिर हम दरगाह से बाहर आये, इन खादिमों ने हमें अपना नाम दर्ज करने के लिये कहा, फिर उन्होंने ख्वाजा के लंगर के लिये दान मांगा, हमने यथा शक्ति दान दिया ।

फिर अढ़ाई दिन का झोंपड़ा देखा । यह मस्जिद एक प्राचीन खण्डहरों से बनाई गई है । ऐसा इसके शिल्प से लगता है । हमने दो स्थान एक ही रात्रि में देखे । खवाजा की दरगाह के बाद हम दादावाड़ी पहुंचे । यह दादावाड़ी प्राचीन चमत्कारी जैन आचार्य का समाधिस्थान है । जैसे अजमेरी ख्वांजा के यहां आकर मन की मुरादें पूरी होती हैं, उसी तरह वह स्थल भी मन की मुरादें पूरी करने वाला है । रात्रि हो चुकी थी । हम अजमेर के बाजार में घूमना चाहते थे, पर सबसे पहले एक होटल में कमरा लिया, वहां अपना सामान टिकाया, फिर गर्मी से मुक्ति पाने के लिये स्नान किया । रात्रि का खाना खाने और बाजार में चहल कदमी करने निकले । भूख ज्यादा लगी थी, मारवाड़ी होटल में खाना खाया, फिर अजमेर के तंग बाजारों की रौनक देखी, अजमेर रौनक वाला शहर है । सारे बाजार में सबसे ज्यादा रौनक हमें खवाजा की दरगाह वाले बाजार में लगी । रात्रि को बाजार में पुलिस का व्यापक प्रबन्ध होता है । इस बाजार में यात्रियों के लिये होटल, गैस्ट हाऊस व धर्मशालाएं हैं । दरगाह में चढ़ाने वाली चादर, फूल व प्रशाद की दुकानें हैं । खवाजा का लंगर शुद्ध शाकाहारी होता है । ऐसा दरगाह के खादिमों ने बताया । लम्बी थकावट के बाद हम वापिस होटल में आये । यहां खूब नींद आई, सुबह को हमने सबसे पहले पुष्कर तीर्थ की यात्रा की । राजस्थान की यह सबसे बड़ी कृत्रिम झील है । हर जगह पंडे पुरोहितों के झुंड घूम रहे थे । सबसे ज्यादा रौनक ब्रह्मा जी के मन्दिर में

देखने को मिली, फिर अलग-अलग देवी-देवताओं के मन्दिर देखते दोपहर हो गई । यहां व्यापक भीड़ थी ।

वापसी मे सोनी जी की नसिया में आये । यहां विशाल जैन मन्दिर है, यहां दिगम्बर सम्प्रदाय ने अयोध्या नगरी की सुन्दर रचना की है । यह नगरी भगवान ऋषभदेव की जन्मभूमि है । इस मन्दिर में जैन इतिहास की घटनाओं का सुन्दर चित्रण है । इसके अतिरिक्त मैंने वे सभी स्थान देखे जिसका मैंने वर्णन पीछे किया है । सोनी जी की नसिया मन्दिर की भव्यता, कला अपने आप में इतिहास है । अजमेर ने वहुत से देशभक्तों को जन्म दिया, इसमें देश की शान पर मिटने वाले श्री अर्जुन दास सेठी इस नगर की शान थे । अजमेर की यात्रा मेरे जीवन की उपलब्धि है । विशेष रूप से अजमेरी ख्वाजा, दादवाड़ी व सोनी जी की नसिया देखने के वाद मेरी धर्म के प्रति आस्था को नया आयाम मिला ।

नाथद्वारा की यात्रा :

राजस्थान में नाथद्वारा तीर्थ हिन्दू धर्म का प्रसिद्ध तीर्थ है । यह मन्दिर भगवान कृष्ण को समर्पित है । मुस्लिम काल में जव प्रतिमाएं तोड़ी जा रही थीं इस प्रतिमा को एक भक्त ने रथ में सवार किया । वह वृंदावन से चला । एक स्थान पर ठहरा । रात्रि को उस भक्त को स्वप्न में भगवान कृष्ण ने दर्शन दिये । उसे आदेश हुआ कि मेरी प्रतिमा को रथ में सवार कर मरु भूमि में ले जाओ जहां यह रथ स्वयं चले रुके, तव वहां मेरा मन्दिर वनाकर स्थापित कर देना । भक्त ने भगवान के आदेश का पालन किया, उसने प्रतिमा को रथ पर सवार किया । रथ वढ़ने लगा । प्रतिमा का प्रभाव था कि कोई आक्रमणकारी इसे खंडित नहीं कर सका, रथ ने मरुभूमि में प्रवेश किया । एक जंगल में रथ स्वयंमेव रुक

गया । भक्त ने लाख कोशिश की, रथ न चला । भक्त ने वहां विश्राम किया, रात्रि को देव ने पुण्य आदेश दिया, मुझे यहां स्थापित कर दो. मुझे यहां कोई खतरा नहीं, यहां मेरी पूजा अर्चना करो, सबकी मनोकामना पूरी हो जायेगी ।"

भक्त ने उसी जंगल में भव्य मन्दिर का निर्माण किया । यहां धर्मशाला की धीरे-धीरे महानता बढ़ने लगी । भक्तजनों का तांता देखकर अनेक मन्दिर व धर्मशालाएं यहां बनीं ।

इस प्रतिमा को लोगों ने श्रीनाथ का नाम दिया, तब से नाथद्वारा के नाम से प्रसिद्ध है । यह अजमर-उदयपुर मार्ग पर स्थित है । नाथद्वारा से पहले किशनगंज, ब्यावर जैसे जैन नगर आते हैं । यहां हर शहर की धर्मशालाएं बनी हैं । पर यहां होटलों का अभाव है । मूल प्रतिमा श्यामवर्ण की है । यह प्रतिमा भव्य, प्राचीन व दर्शनीय है । हर सुबह भक्तों की लम्बी-लम्बी लाईनें नाथद्वारा के मन्दिरों में लग जाती हैं । बहुत लम्बे इंतजार के बाद प्रतिमा के पुण्य दर्शन होते हैं । हम अजमेर से रात्रि को बस पर सवार हुए । डीलक्स बस सेवा सारी रात्रि चलती है । सुबह चार बजे हम नाथद्वारा की पवित्र धरती पर उतरे । यह बस बाईपास से जाती थी । जिसका हमें पता नहीं था, रात्रि काफी थी, कोई रिक्शा भी उपलब्ध भी नहीं था । करीब. तीन कि.मी. घूमकर हम नाथद्वारा मन्दिर में पहुंचे । वहां लम्बी कतारें लगी थीं । लोग धर्मशाला से स्नान कर, तैयार होकर जा रहे थे । हम भी उन भक्तों में शामिल हो गये । एक घण्टा इंतजार करने के बाद हमारी बारी आई । फिर एक धर्मशाला में जाकर स्नान किया । फिर नाथद्वारा के मन्दिर देखे, सुबह का नाश्ता किया । फिर आगे जाने का विचार बनाने लगे । हमें राणकपुर जाना था, पर रास्ते में जो भी दर्शनीय स्थल

आते थे, उनकी भी यात्रा करनी जरूरी थी । हम नाथद्वारा बस स्टैंड पर आये, वहां किसी ने सलाह दी कि आप जीप द्वारा सफर करें, इसमें समय की बचत होगी और ज्यादा स्थल देख पाओगे । इसी दृष्टिकोण को सामने रखकर हम एक जीप पर सवार हुए । उसे यात्रा के बारे में समझा दिया ।

सांडेराव तीर्थ की यात्रा :

रास्ते में हम जा रहे थे तो सर्वप्रथम राणा प्रताप की हल्दी घाटी देखी । यह क्षेत्र उदयपुर जिले में पड़ता है । सांडेराव जैन कला का मुख्य केन्द्र है । यहां की प्रतिमा का इतिहास २५०० वर्ष पुराना माना जाता है। प्रतिमा के परिसर की कारीगरी सुन्दर है । यहां चमत्कारी मणिभद्र यक्ष का स्थान है, ठहरने के लिये धर्मशाला व भोजनशाला की व्यवस्था अच्छी है, यहां मूलनायक भगवान पार्श्वनाथ जी हैं।

श्री खुडाला यात्रा :

सांडेराव से ६ कि.मी. की दूरी पर प्रभु धर्मनाथ की संवत १२४३ की प्राचीन प्रतिमा, कलात्मक मन्दिर में स्थित है, यहां भी ठहरने व भोजन की सुन्दर व्यवस्था है, रास्ते में एक लिंग तीर्थ के दर्शन भी किये, जो नाथद्वारा से २५ कि. मी. की दूरी पर है ।

श्रीघाणेराव तीर्थ :

इस तीर्थ का निर्माण राणकपुर जाने वाली सड़क पर हुआ है, इस गांव में राणकपुर तीर्थ के निर्माता धारणाशाह की चौदहवीं पीढ़ी निवास करती है । यह नौमंजिला स्तूप है । जिसकी आठवीं नौवीं मंजिल में चतुर्मुखी मन्दिर है । दो जैन मंदिर इस कीर्ति स्तम्भ के पास हैं जो कला का सुन्दर

नमूना है ।

इस प्रकार रास्ते में हम तीन जैन तीर्थों की यात्रा कर चुके थे, दो हिन्दू तीर्थ भी हमने देखे, समयाभाव के कारण हम हम शीघ्र राणकपुर पहुंचना चाहते थे ।

दोपहर हो चुकी थी, हमने एक स्थान पर खाना खाया । फिर राणकपुर की ओर रवाना हो गये । यह रास्ता पहाड़ी था, भयंकर गर्मी के वावजूद यह पहाडियां मन को शान्ति प्रदान कर रही थीं । यह सव अरावली के दामन में स्थित थीं । राजस्थान का कण-कण भारतीय कला एवं इतिहास की एक मूंह बोलती तस्वीर प्रस्तुत करता है ।

निर्माण कार्य को रोकने का कारण पूछा तो शिल्पीयों ने कहा "हम ऐसे श्रावक के यहां काम नहीं कर सकते, जो घी में से मक्खी निकाल कर, उससे लगे घी को मूंछों को लगाता है। ऐसा व्यक्ति इतने बड़े भव्य कार्य को कैसे करेंगे। मन्दिर में तो करोड़ों रूपए का द्रव्य लगना है।

सेठ ने शिल्पीयों से प्रार्थना की "हे शिल्पीयो ! मैंने मक्खी की जान बचा कर कृपणता का प्रमाण नहीं दिया, यह कार्य तो मेरे अहिंसा अणुव्रत का प्रमाण है। बाकी घी का अपव्यय करना कहां ठीक है, मैंने तो घी जैसे द्रव्य को पवित्र मान कर अपनी मूंछों पर लगाया है। सो आप शीघ्र कार्य शुरू करें। जल्द ही प्रभु ऋषभदेव को स्थापित करो। आप की मजदूरी रोजाना दी जाएगी। आप प्रभु का नाम लेकर कार्य शुरू करो। मुझे मेरे स्वप्नों की जिनालय स्थापित कर जिनशासन की प्रभावना आप की सहायता से करनी है।" सेठ की बात सुन कर मन्दिर का कार्य शुरू किया।

सेठ की बात कारीगरों व दीपा को समझ आ चुकी थी। पास वाले पहाड़ की खान से पत्थर मंगवाया गया। संगमरमर का पांच मंजिला कलात्मक भवन तैयार होने लगा। इसी बीच भगवान ऋषभदेव की चतुंमुखी प्रतिमा स्थापित करने की योजना बनी। सारा मंदिर ५० वर्षों में बन कर तैयार हो गया। अंत मंदिर संवत १४९६ में आचार्य सोम सुन्दर जी महाराज के कर कमलों से भव्य मंदिर की प्रतिष्टा करवाई।

राणकपूर जैन धर्म की श्रद्धा स्थली और भारतीय शिल्प का अनूटा उदाहरण है। इस विशाल मन्दिर के हर इंच पर कला का निखार है। यह तीर्थ विदेशी आक्रमणों के बावजूद सुरक्षित रहा। प्राकृतिक सौंदर्य के बीच स्थापित यह राणकपुर तीर्थ भारतीय शिल्प का नाभि स्थल है।

इस की प्रथम झलक से हमारे भारतीय शिल्पीयों की लगन व कला का पता चलता है। हमारी भारतीय वास्तु विद्या कितनी विशाल थी, कारीगर कैसे सिद्धहस्थ थे ? पत्थर में कैसे जान डाल देते थे ? इसका प्रमाण यह तीर्थ है। मन्दिर के शिल्प समृद्ध गुंवजों एवं स्तम्भों को देख कर ऐसा लगता है जैसे भारतीय स्थापत्य की अंगूठी में यह मन्दिर रूपी हीरा जड़ा हो। यह तीर्थ और इस का वातावरण देवलोक से कम नहीं है।

मन्दिर के मुख मंडप के प्रवेश द्वार में स्थापित एक शिलालेख से ज्ञात होता है कि इस तीर्थ की स्थापना में यहां के राजा राणा कुम्भा ने महत्वपूर्ण योगदान दिया था। उन्होंने यह स्थान दान दिया था। सेठ धारणीशाह निकटवर्ती गांव वादिया के निवासी थे। वह राणा कुम्भा के मंत्री थे। मंत्री ने अपने आश्रय दाता को मन की भावना वताई। राजा ने वर्तमान स्थल मन्दिर को दिया। इस स्थल का नाम राणकुम्भापूर पड़ा जो वाद में राणकपूर के रूप में जाना गया। यह एक नगर भी वस गया। धारणा ने भक्ति पूर्वक पूर्वक यह नाम दिया।

राणकपूर का मन्दिर अरावली की पहाडीयों में सुरक्षित है। पर्यटक दूर दूर से इसे निहार कर प्रसन्न हो जाता है। ज्यों ज्यों मन्दिर के करीव पहुंचता है, उपशिखरों पर हवा में घंटियों की टंकारें उसके हृदय को आन्दोलित करने लग जाती हैं। प्रभु ऋषभदेव की प्रतिमा के दर्शन कर भावविभोर हो जाता है। चाहे यह मन्दिर जैन शिल्प पर आधारित है पर इस के निर्माता ने रामायण और महाभारत के कुछ दृष्य का यहां शिल्पाकरण किया गया है।

यह मन्दिर सम्प्रदायिक उदारता का प्रतीक है। २९ सीढ़ीयां चढ़ने पर पर्यटक को पाषाण की शिल्पकृत छत

की और आकर्पित होता है। छत पर एक पंच शरीरधारी वीर पुरूष की विशाल प्रतिमा अंकित की गई है जिसका सिर एक - शरीर पांच हैं। यह प्रतिमा महाभारत का कीचक है। यह दृष्य अत्यंत मनोहर और कौतुहल भरा है। इसी छत पर रामायण और महाभारत की अनेकों घटनाओं का वर्णन है।

प्रवेश द्वार पार करते ही अगल-बगल दो प्रकोष्ट बने हुए हैं। जिस में जैन तीर्थंकरों की प्राचीन प्रतिमाएं हैं। एक प्रकोष्ट में खडी व बैठी प्रतिमाएं हैं। कुछ प्रतिमाएं तो विदेशी अक्रांता का शिकार हो चुकी हैं। पर भगवान ऋषभदेव के प्रताप से मन्दिर मूल रूप सुरक्षित हैं। कुछ ही सीढ़ीयां चढ़ने पर प्रथम प्रांगण आता है। यह मन्दिर को सूक्ष्म तोरणों को देखा जा सकता है। मगर यहां खडे हो कर शिल्प की विशालता को निहारा जा सकता है। मन्दिर में जिधर भी नजर डालें उधर खम्भे ही खम्भे दिखाई देते हैं। इनकी संख्या १४४४ है। विशेपता यह है कि हर स्तम्भ पर कला का नया रूप है। हर स्तम्भ अपने आप में शिल्प का स्वतन्त्र आयाम है। संसार में यह एक मात्र इमारत है जहां संगमर की स्तम्भावली दिखाई देती है।

जब हम प्रांगण में खड़े हो कर अपनी दृष्टि छत की ओर निहारते हैं तो कला का विशाल जीवंत रूप पाते हैं। इस छत पर बनी हुई है एक कल्पवल्ली यानि कल्पतरू का एक लता दिखाई देती है। यह मन्दिर भारतीय स्थापत्य कला के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इस स्थान का नाम मेघनाद मंडप कहा जाता है।

चार कदम आगे बढ़ते ही भक्त स्वयं को छज्जे नुमा गुम्बज के नीचे पाता है। गुम्बजों में लटकते झूमर ऐसे लगते हैं मानों कानों में रत्न जडित कुण्डल लडक रहे हों। यहीं दोनों ओर दो ऐसे स्तम्भ हैं जिनमें मन्दिर निर्माता

धरणाशाह व शिल्पकार दीपा की प्रतिमाएं हैं जो इतिहास कहती हैं। बाईं ओर सेट जी की प्रतिमा और दाई और शिल्पी दीपा की प्रतिमा है। यह प्रतिमाएं भारतीय इतिहास कला संस्कृति की धरोहर हैं। मूल मन्दिर में १६ देवीयों की प्रतिमाएं शोभायमान हैं। दीपा की प्रतिमा स्थापित कर सेट धर्णाशाह ने जैन समाज को गरीव अमीर की भेद रेखा समाप्त करने का संदेश दिया है।

गर्भ ग्रह के वाहर निर्मित तोरण, शिल्प कला का उत्कृष्ट उदाहरण है। यहां पहुचंते ही भक्ति का सागर हृदय में उछलने लगता है। इसी मूल गर्भ गृह में भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा है। यह प्रतिमा ६२ फुट की कायोत्सर्ग पद्मासन में परिकर सहित है। मन्दिर के तीनों ओर भी इसी तरह की तीन प्रतिमाएं हैं। इसी कारणं इस का चतुंमुख जिनप्रसाद है। गर्भ गृह की आंतिरक सरंचना स्वस्तिकार कक्ष के रूप में की गई है। मूल मन्दिर के वाहर रक्षक देव की चमत्कारिक प्रतिमा स्थापित है।

गर्भ गृह के वाहर दो विशाल घंटे हैं। जिनमें से एक को नर व दूसरे को मादा कहा जाता है। यह भेद घंटनाद करने से पता चलता है। घंटे में ऐसी आवाज आती है जैसे कोई नवकार मंत्र के सार शव्द ओम की ध्वनि कर रहा हो। मूल मन्दिर की वाईं ओर एक विशाल वृक्ष है। जिसे रायण वृक्ष कहा जाता है। वृक्ष के नीचे प्रभु ऋषभदेव के चरण शत्रुंजयतीर्थ की याद दिलाते हैं। वृक्ष के पास एक सहस्त्रकूट नामक स्तम्भ है जो अधूरा है। इस के पूरा करने के अनेकवार कोशिश की गई पर पूरा नहीं हो पाया। सहस्त्रकूट स्तम्भ के सामने एक हाथी पर प्रभु ऋषभदेव की माता विराजमान है। माता मरूदेवी सरलात्मा थीं। वह अपने पुत्र के वातसल्य भरी रहती थीं। एक वार प्रभु अयोध्या

पधारे। प्रभु ऋषभदेव का समोसरण लगा। माता मरूदेवी हाथी पर वैठी समोसरण में आ रही थी। रास्ते में सोचती जाती "मेरा पुत्र ऋषभ कोई वडा आदमी वन गया है, जो मेरी खवर नहीं ले रहा। मैं सव से उसे उपाम्लभ दूंगी कि उसने मुझ वुढीया की खवर सार क्यों नही ली।" माता क्या जाने कि उस का वेटा तो केवली वन कर तीन लोक का नाथ प्रथम तीर्थंकर वन चुका है। संसार को मोक्ष मार्ग का रास्ता वता रहा है। उस की धर्म दर्शना तो मैं देव, मनुष्य, पशु सभी उस का उपदेश सुनने आते हैं।"

माता मरूदेवी समोसरण के करीव पहुंची। समोसरण में देव, राजा, मनुष्य व स्त्रियों के समूह उस की देशना सुन रहे थे। माता मरूदेवी को समोसरण में पहुंचते ही रागद्वेष समाप्त हो गया। हाथी पर वैठे वैठे वह सर्वज्ञ सर्वदर्शी वन गई। श्वेताम्वर जैन मान्यता के अनुसार इस युग में प्रथम मोक्ष जाने वाली वह पहली जम्वु दीप भरत क्षेत्र की पवित्र आत्मा थी।

उसी माता मरूदेवी को इस मन्दिर में हाथी पर वैठे दिखाया गया है। इसी के पास एक विशाल तल घर है। हमलावरों से यहां प्रतिमाओं को छिपा कर रखा जाता था।

मूल गर्भ गृह की दाहिनी ओर पार्श्वनाथ की एक ऐसी प्रतिमा है जिस के सिर पर एक हजार नागफण हैं। ऐसी मूर्ति सारे भारत में एक ही है। इस मूर्ति की प्रमुख विशेषता यह है कि सभी सर्प एक दूसरे से गूंथे हैं। इनका अंतिम भाग अदृश्य हैं।

यहां परिकल्पित गुम्वजों में एक ऐसा गुम्वज है जिसे अगर ध्यान पूर्वक न देखा गया, तो यात्री उस गुम्वज को मन्दिर की कला समृद्धि में वाधक वनेगा। मन्दिर के उपनी भाग में निर्मित यह गुम्वज वास्तव में शंख मण्डप है।

उसमें ध्वनि तरंग के विज्ञान को स्थापित किया गया है। गुम्वज के एक छोर पर एक शंख वना हुआ है जिस में प्रसारित होने वाली ध्वनि से सम्पूर्ण गुम्वज तरंगित दिखाया गया है।

मन्दिर के वर्गाकार गर्भ गृह से अध्ययन प्रारम्भ किया जए तो मन्दिर की सुस्पष्ट क्रमवद्धता दिखाई देती है। यह मन्दिर पश्चिमी पहाड़ी की ढलान पर स्थित अपनी अनुपम छटा विखेर रहा है। मन्दिर के पश्चिमवर्ती भाग को इस दिशा से कुछ उंचा वनाया गया है। लगभग ६२ गुणा ६० मीटर लम्वे चौड़े क्षेत्रफल की ढलान का चारों ओर की दीवार मन्दिर की उंचाई की वाह्य संरचना में मुख्य भूमिका रखती है। मन्दिर के चार प्रवेश मंडम दो तल के हैं और तीन ओर की भितियों से घिरे हैं। मनोहारी प्रवेश मण्डप में सवसे मड़ा मंडप पश्चिम की ओर है जो मुख्य प्रवेश मण्डप है।

मन्दिर के परिसर में छह देवकुलिकाएं हैं। जिन पर छोटे छोटे शिखर हैं। यह शिखर मन्दिर की शोभा को वढ़ाते हैं। मन्दिर का शिखर तीन मंजिल का है। मन्दिर के उतंग शिखर पर लहराता ध्वजा संसार को अहिंसा व शांति का उपदेश देता है। पूर्णिमा की चांदनी में यह मन्दिर अपनी अलौकिक छटा विखेरता है।

इस मन्दिर के अतिरिक्त यहां तीन मन्दिर और हैं। यह सभी मन्दिर कला का खजाना हैं। इन में दो मन्दिर २३वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ को समर्पित हैं। एक मन्दिर सूर्य देव का प्राचीन मन्दिर है। भगवान पार्श्व नाथ के मन्दिर की कला, भगवान ऋषभदेव के मन्दिर से कम नहीं। इस मन्दिर का निर्माण कारीगरों ने अपनी कला प्रदर्शित करने के लिए वची खुची सामग्री से किया था। कारीगरों की प्रभु